
बून्दी जिले में औषधीय फसलों की खेती व तत्सम्बन्धी उद्योग

डॉ. भारतेन्दु गौतम
सहायक आचार्य
भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय
बून्दी, राजस्थान, भारत

सारांश

कृषि कार्य से खाद्यान्न, दलहन, तिलहन आदि उत्पादन प्राप्त होते हैं। उक्त प्रतिरूप कृषि के परम्परागत स्वरूप को परिलक्षित करता है। वर्तमान समय में कृषि उत्पादन में एक नवीन प्रवृत्ति औषधीय फसलों की खेती के रूप में उभर कर सामने आई है। इसके अन्तर्गत कृषि प्रक्रिया द्वारा विभिन्न प्रकार की औषधीय फसलें प्राप्त की जाती है तथा उन्हें औषधी निर्माण केन्द्रों तक भेजा जाता है। बून्दी जिले में औषधीय फसलों की कृषि के लिए अनुकूल भौगोलिक दशाएँ विद्यमान हैं। यदि जिले में औषधीय फसलों की कृषि को प्रोत्साहन दिया जाये तो बून्दी जिला न केवल औषधीय फसलों अपितु औषधीय फसलों पर आधारित उद्योगों की अवस्थापना में भी अग्रणी हो सकता है।

महत्वपूर्ण शब्द: खाद्यान्न, दलहन, तिलहन, परम्परागत स्वरूप, औषधीय फसलें, भौगोलिक दशाएँ।

वर्तमान समय में औषधीय फसलें चिकित्सा विज्ञान में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाती जा रही हैं। राजस्थान विविध औषधीय फसलों की कृषि में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। आयुर्वेद औषधि विशेषज्ञों के अनुसार सम्पूर्ण हाड़ौती सम्भाग की जलवायु औषधीय फसलों के उत्पादन के अनुकूल है। क्षेत्र की मध्यम-काली मृदा, पर्याप्त वर्षा, नहरी सिंचाई सुविधा आदि कारक क्षेत्र को औषधीय फसलों के उत्पादन के अनुकूल बनाते हैं।

बून्दी जिला राजस्थान राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसका विस्तार 24°59'11" से 25°53'11" उत्तरी अक्षांश तथा 75°9'30" से 76°19'30" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। बून्दी जिले का कुल क्षेत्रफल 5763 वर्ग कि.मी. है। क्षेत्रफल की दृष्टि से बून्दी जिले का राजस्थान में 22 वाँ स्थान है। बून्दी जिले का उत्तर से दक्षिण विस्तार 104 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम विस्तार 110 कि.मी. है। बून्दी जिले के उत्तर में टोंक जिला, पश्चिम में भीलवाड़ा, दक्षिण-पश्चिम में चित्तौड़ तथा दक्षिणी सीमा पर कोटा स्थित है जो चम्बल नदी द्वारा बून्दी जिले से अलग होता है।

बून्दी जिले में औषधीय फसलों की कृषि हेतु उपलब्ध भौगोलिक दशाएं

बून्दी जिला औषधीय फसलों की खेती के लिए आवश्यक भौगोलिक दशाएं रखता हैं। यहां पर अनुकूल जलवायु उपलब्ध है जो औषधीय फसलों के लिए आवश्यक हैं। यहां पर उष्ण कटिबंधीय दशाएं पायी जाती हैं जिसमें ग्रीष्म, शीत व वर्षा तीनों ऋतुएं अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। बून्दी जिले का वार्षिक वर्षा औसत 72.41

सेमी. है जो विविध औषधीय फसलों की कृषि के लिए उपयुक्त हैं। बून्दी जिले में दक्षिणी-पूर्वी भागों में मध्यम काली मृदा पायी जाती है जो औषधीय फसलों की खेती के लिए अनुकूल मानी जाती हैं। ग्रीष्मकालीन औसत तापमान 36 से 38 डिग्री सें.ग्रे. व शीतकालीन औसत तापमान 18 से 20 डिग्री सें.ग्रे. रहता है। यहां के किसान प्रगतिशील विचारधारा के है जो कृषि में नवाचार के पक्षधर हैं।

उक्त समस्त कारक सम्मिलित रूप से बून्दी जिले में विविध औषधीय फसलों की कृषि को आधार प्रदान करते हैं।

बून्दी जिले में औषधीय फसलों की कृषि

बून्दी जिले में कुछ औषधीय फसलों जैसे, मेथी, ग्वार पाठा, सफेद मूसली, सुगंधित गेंदा, श्याम तुलसी, सर्पगंधा, अश्वगंधा, काली जीरी, माल कांगनी, गुडमार, कौंच काला, कौंच सफेद आदि की कृषि सरलता पूर्वक की जा सकती है। इनमें से मेथी, ग्वार पाठा, श्याम तुलसी, सुगंधित गेंदा, सफेद मूसली के लिए अनुकूल दशाएँ तो सम्पूर्ण जिले में तथा शेष औषधीय फसलों की कृषि के लिए अनुकूल दशाएँ बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलों में विद्यमान है। तालिका 1.1 में बून्दी जिले में उत्पादित होने वाली व संभावित औषधीय फसलों की उत्पादक दशाएँ दर्शायी गयी हैं।

तालिका - 1.1

जिला बून्दी : उत्पादित व सभापित औषधीय फसलों की खेती व लाभ

क्र. सं.	फसलों के नाम	के बीज किलोग्राम	मूल्य/रूपये/किग्रा	एक एकड़ हेतु बीज मात्रा	समय	फसल तैयार होने की अवधि	उत्पादन एकड़	प्रति	अनुमानित लाभ/एकड़	
1	सफेद मूसली	900	रूपये/किग्रा	4	किग्रा	मई-जून	8-9 माह	20	किग्रा बीज	3-4 लाख
2	कलिसारी	300	रूपये/किग्रा	3	किग्रा	मई-जून	7-8 माह	100	किग्रा बीज	78-80 हजार
3	सर्पगंधा	5000	रूपये/किग्रा	3	किग्रा	मई-जून	18 माह	7-8	किग्रा	1.50-2 लाख
4	अकरकराह	1000	रूपये/किग्रा	1	किग्रा	मई-जून	18 माह	2	किग्रा फूल व 2 किग्रा जड़	40-50 हजार
5	कालमेघ	1500	रूपये/किग्रा	1	किग्रा	मई-जून वर्ष भर	4 माह	15	किग्रा	40 हजार
6	बायवडंग	150	रूपये/किग्रा	2	किग्रा	मई-जून	18 माह बाद प्रतिवर्ष	5-6	किग्रा बीज	30 हजार
7	काली जीरी	100	रूपये/किग्रा	5	किग्रा	मई-जून	4 माह बाद प्रतिवर्ष	5-6	किग्रा बीज	30 हजार
8	सुगंधित गेदा	120	रूपये/किग्रा	1	किग्रा	मई-जून वर्ष भर	4 माह बाद प्रतिवर्ष	30-35	लीटर तेल	30 हजार

क्र. सं.	फसलों के नाम	के बीज किलोग्राम	मूल्य/रूपये/किग्रा	एक एकड़ हेतु बीज मात्रा	समय	फसल तैयार होने की अवधि	उत्पादन एकड़	प्रति	अनुमानित लाभ/एकड़	
9	मालकांगनी	300	रूपये/किग्रा	2	किग्रा	मई-जून	8-9 माह	3-4	किग्रा बीज	40 हजार
10	गुडमार	25000	रूपये/किग्रा	1	किग्रा	मई-जून	8-9 माह	4-5	किग्रा पत्ते हर चार माह पर	50 हजार
11	कौंच काला	30	रूपये/किग्रा	5	किग्रा	मई-जून वर्ष भर	8-9 माह	10-12	किग्रा	20 हजार
12	कौंच सफेद	20	रूपये/किग्रा	5	किग्रा	मई-जून वर्ष भर	8-9 माह	10-12	किग्रा	20 हजार
13	काली तुलसी	200	रूपये/किग्रा	2	किग्रा	मई-जून वर्ष भर	6 माह बाद प्रतिवर्ष			20 हजार

स्रोत : विभिन्न पत्रिकाओं के लेख एवं जिला कृषि प्रतिवेदन, बून्दी (2007)

तालिका 1.1 से स्पष्ट है कि औषधीय फसलों एक बार बोने के उपरांत कई वर्षों तक लाभ प्रदान करती है।

बून्दी जिले में औषधीय फसलों के उत्पादन की अपार संभावनाओं को देखते हुए राजनीतिक व प्रशासनिक स्तर पर प्रोत्साहन तथा आर्थिक सहायता की अनिवार्य आवश्यकता है। यदि जिले में इन औषधीय फसलों की कृषि को राजनीतिक-प्रशासनिक प्रोत्साहन प्रदान किया जाये तो जिले में अल्प विकसित औषधीय फसलों की कृषि को सुदृढ़ आधार प्राप्त होगा तथा क्षेत्र के किसान इन फसलों के उत्पादन की ओर उन्मुख होंगे।

संभावित उद्योग

बून्दी जिला विविध कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना व विकास में अग्रणी है। यहां पर विविध कृषि आधारित उद्योग पूर्व में ही कार्यरत है जैसे- चावल उद्योग, खाद्य तेल उद्योग, चीनी उद्योग, तेल घाणी उद्योग आदि। बून्दी जिले में औषधीय फसलों की खेती के लिए भी आवश्यक दशाएँ विद्यमान हैं। यहां पर औषधीय फसलों से सम्बंधित विविध उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। बून्दी जिले में औषधीय फसलों के परिष्करण व प्रसंस्करण उद्योग की स्थापना की प्रबल संभावना है क्योंकि इस प्रकार के उद्योग के अभाव में यहां की औषधीय फसलों के उत्पादन को निर्यात करना पड़ता है। इस प्रकार का उद्योग यहां स्थापित होने से स्थानीय उत्पादन कच्चे माल के रूप में सरलता से प्राप्त हो सकेगा। बून्दी जिले में औषधीय फसलों का उत्पादन बढ़ने के उपरांत जिला मुख्यालय पर आयुर्वेदिक औषधि अनुसंधान तथा उत्पादन केंद्र स्थापना की प्रबल संभावनाएँ हैं। स्थानीय परिवहन, कच्चा माल, उपलब्ध आधारभूत संरचना आदि कारक बून्दी जिले में औषधीय फसलों सम्बंधी उद्योगों के विकास के

लिए सहायक हो सकते हैं किन्तु इसके लिए राजनीतिक व प्रशासनिक प्रोत्साहन अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

जिले में आयुर्वेदिक औषधीय उद्योग, अनुसंधान तथा उत्पादन केन्द्र स्थापित होने से न केवल जिले की अर्थव्यवस्था को गति प्राप्त होगी वरन् सम्पूर्ण हाड़ौती सम्भाग के किसान औषधीय फसलों की कृषि की ओर उन्मुख होंगे। जिले में औषधीय फसलों की कृषि तथा औषधि अनुसंधान व उत्पादन केंद्र की स्थापना की संभावनाओं का पूरा दोहन करने के लिए प्रशासनिक व राजनीतिक स्तर पर गंभीर प्रयास तथा प्रोत्साहन अत्यंत आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. *Agrawal, K.C. (1982) : "Industrial Location in Agra District and their Impact on Regional Development", Ph.D. Thesis, Agra University, Agra.*
2. *Alexander, J.W. and Gibson L.J. (1979) : Economic Geography, N.J. (U.S.A.).*
3. *Alexanderson, G. (1967) : Geography of Manufacturing, Printice Hall.*
4. *Ashton, J. and Rogers, S.J. (1967) : Economic Change and Agriculture, Edinburgh : Oliver & Boyd.*
5. *Ballabon, M.B. (1957) : Putting the Economics into Economic Geography, Eco. Geog. 33, pp. 217-223.*
6. *Barthwal, R.R. (1984) : Industrial Economics pp. 10-25, 361-380.*

7. *Belshaw, DGR and Jackson, B.G. (1966) : Type of Farm areas : The application of sampling methods, Trans. Instt. Brit Geogr. 38, pp 89-93.*
8. *Bhalla, C.S. (1962) : Changing Agrasion Structure in India. A study of the impact of Green Revolution in Haryana; Meerut : Meenakshi Prakashan.*
9. *Bhatia, S.S. (1960) : An Index of Crop Diversification, Prof. Geogr. 12.2, pp. 3-4.*
10. *Boesch, H. (1964) : A Geography of World Economy, D. Van Nostrand Co. Inc.*
11. *Buchanan, R.O. (1959) : Some Reflections of Agriculture Geography, Goeg. 44, pp 1-13.*
12. *Callius, J.C.R. and Irwin, P.G. (1985) : Economic and Settlnent Geography.*
13. *Chakravorty, A.K. (1973) : Green Revolution in India, Ann. Ass. Am. Geogr. 63, pp. 319-330.*
14. *Chatterji, S.P. (1962) : Planning for Agriculture Development in India, Nat. Geogr. 5.*
15. *Chaudhary, M.R. (1970) : Indian Industries Development and Location, Indian Book House, Kolkata.*
16. *Gautam, Bhartendu, (2019), : Present Status and Issues of Rice Industry: A Case Study of District Bundi, Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika, Vol.6, Issue 9, pp.E-58-65.*

17. *Gautam, Bhartendu, (2019), : Potentialities of Industrial Development in District Bundi, Remarking An Analisation, Vol.4, Issue 2, pp.E-89-96.*
18. *District Statistical Abstract- 2015 to 2018*
19. *District Industrial Potential Survey- 2015 to 2018*
20. <https://industries.rajasthan.gov.in/riico#>
21. कौशिक, एस.डी. (2001): मानव तथा आर्थिक भूगोल, रस्तौगी पब्लिकेशन्स मेरठ।
22. कुमार, प्रमीला एवं शर्मा, श्री कमल (1997): कृषि भूगोल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
23. जैन, पुरुषोत्तम (1998): आर्थिक भूगोल की समीक्षा, रस्तौगी प्रकाशन, मेरठ।
24. टॉड, जेम्स (1987): राजस्थान का इतिहास, युनिक ट्रेडर्स, जयपुर।
25. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी.एन. (1997): कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।